श्वासकुठार रस

[illegible] चटनी

+ अभ्रक + टंकण

प्रतापलंकेश्वर रस

+ लोह + अभ्रक

अश्वकंचुकी

निम्न प्रयोग अनुपान रूप से अथवा स्वतंत्र औषधि रूप में सेवन कराये जा सकते हैं, वैद्यों को चाहिए कि वे स्वयं तैयार कर लें अथवा धनाढ्यों द्वारा प्राप्त करने का उद्योग करें।

(१) श्वासारि अवलेह—

धतूर पत्र रस २० तो०

अग्नि पर पकाते हुए गाढ़ा कर मरिच ३ माशा, मुलहटी ६ माशा, अडूसा ६ माशा, मिश्री ५ तो० मिला कर अवलेह बनालें। मात्रा ½ रत्ती से १ रत्ती तक।

(२) लाल कनेर भस्म (पत्तों की भस्म) ½ रत्ती से २ रत्ती त्रिकटु १ माशा दिन में ३-४ बार पान के रस के साथ दें।

(३) कूठका शरबत बना कर दें।

(४) लहसुन अर्क

(५) श्वासारि धूम्रपान
(देखो ज्वर में श्वास)

+ चिन्हित औषधिय सहयोगी (अनुपान) या स्वतंत्र रूप से भी प्रयुक्त होती है।

(६) आक्ल ५ तो०　　　　　　　　　　　नमक ५ तो०
अर्क दुग्ध ५ तो०

भस्म कर लें। मात्रा १ रत्ती से ३ रत्ती तक शहद के साथ दें।

(७) कलमीशोरा २० तो०　　　　　　　　नवसादर ५ तो०
फिटकरी ५ तो०

अग्नि पर पिगला कर पर्पटी बना लें। मात्रा २ रत्ती से ६ रत्ती तक।

(८) करीर (केर) वृक्षकी भस्म या पाताल यंत्र-द्वारा निकला हुआ जड़ का चोवा दें।

(९) धत्तूर पंचाङ्ग १ तो०　　　　　　　जल ८ तो०

क्वाथ करे चौथाई रहने पर छान लें, फिर दूनी मिश्री मिला कर शरबत बना लें। मात्रा १० से १५ बूंद जल के साथ।

(१०) कनकासव

(११) मज्जीक्षार के टुकड़े गरम कर २ के जल के भीतर बुझावे, उस जल को लगातार पीने से श्वास में शांति मिलती है।

(१२) बहेड़े का चूर्ण १ तो० शहद में मिला कर चाटने से लाभ होता है।

(१३) हल्दी　　　　　　　　　　　　　मरिच
मुनक्का　　　　　　　　　　　　　रास्ना
पीपर　　　　　　　　　　　　　　कचूर
गुड़

इनको कड़वे तैल के साथ चाटने से श्वास में लाभ होता है।

(१४) गुड़ १ तो०　　　　　　　　　　कड़वा तेल आवश्यकतानुमार

२१ रोज तक चाटे।

(१५) पुनर्नवाकी जड़ को कूट कर रोज १॥ माशा पानी से दें। अथवा भस्म करके दें।

(१६) मकड़ी का जाला ¼ इंच गुड़ में मिला कर भोजन के बाद दोनो वार लें, पांच दिन तक। पथ्य में तेल नमक खटाई न खावें घृत, खांड, दूध, का सेवन करे; श्वास पर इस दवा से बहुत फायदा होता है यह दवा होंम्योपैथी में भी बहुत काम में ली जाती है इसे Blatta Orientalis कहते हैं;

(१७) पीपल की अन्तर छाल ½ तो० बारीक पीस कर शरदपूर्णिमा की रात्रि में खीर के साथ मिला कर २ घन्टे चन्द्र प्रकाश में रख कर खिलावे रात्रि भर नींद नहीं लेना चाहिए। एक बार में ही लाभ दायक है।

(१८) धत्तूरे और जवासे के पत्ते निर्धूम अङ्गारों पर डाल कर उस धूम्र को फेफडों में पहुँचाओ अर्थात् पिलाना चाहिए, दौरे का वेग शांत होगा।

(नोट)-पहले रोगी को जरासा धूआं पिलाकर आजमाइश कर लेनी चाहिए क्योंकि धत्तूरा एक प्रकार का जहर है, जरासा धूआं पीने से यदि लाभ मालूम हो तब अधिक पीना चाहिए अन्यथा छोड़ देना चाहिए। इससे श्वास के दौरे में तत्काल लाभ होता है।

(१९) क्योंकि श्वास में वायु प्रबल होता है अतः इसके लिए ईंट को गरम कर कपड़े में लपेट कर छाती पर हल्का सेक करना चाहिए। अलसी को तवे पर खूब गरम कर पोटली बांध कर सेक करेना चाहिए।

(२०) श्वास के दौरे में कनकासव का प्रयोग भी उत्तम लाभकारी है।

(२१) खाट पर कपड़ा बिछा उसपर बालू को खूब गरम कर बिछा देवें और उस पर थोड़े २ पानी के छींटे डाले, फिर दूसरा कपड़ा ऊपर बिछा रोगी को लिटा दे, श्वास के वेग को शांत करने में उत्तम है।

क्षय

सरकार द्वारा दी जानेवाली औषधियों के उपयोग का विवरण.

शृङ्गभस्म—

+ अभ्रक भस्म　　　+ कपर्द भस्म

एलादि वटी

लक्ष्मीविलास रस

सितोपलादि चूर्ण

तालिशादि चूर्ण

लवंगादि चूर्ण

प्रवाल भस्म

वासा

अग्नितुण्डी वटी

पाषाण (गोदन्ती हरिताल भस्म)

लोह

कपूर

यवक्षार

सुवर्ण वसंत मालती

निम्न प्रयोग अनुपान रूप में अथवा स्वतंत्र रूप में सेवन किये जा सकते है। वैद्यों को चाहिए कि वे उन्हें स्वयं बनालें अथवा उद्योग करके धनाढ्यों से प्राप्त करने का प्रयत्न करें।

(१) लहसुन रस

(२) केला रस

(३) अश्वगंधा

(४) बला

(५) नागबला

(६) पीपल पंचाङ्ग सत्व

+ अभ्रक + शृङ्गभस्म

(७) गिलोय सत्व

(८) बहेड़ा अडूसा
मुलहटी मिश्री

इनका शरबत बना लें।

+ शृङ्गभस्म + कपर्द भस्म

(९) देवदारू

(१०) गुगल-धूप

(११) गुगल-अंत्रचय

(१२) सतावर

(१३) विदारीकन्द

(१४) सालम

(१५) मोती

(१६) सुवर्ण

(१७) अजा पंचाङ्ग घृत—

(१८) च्यवनप्राश अवलेह

(१९) चातुर्जात अवलेह

(२०) महालक्ष्मी विलास रस

(२१) हेम-गर्भ पोटली रस ½ रत्ती　　मकरध्वज वटी ½ रत्ती
श्रृङ्ग भस्म २ रत्ती　　यवक्षार १ रत्ती
सितोपलादि ६ रत्ती　　गिलोय सत्व ६ रत्ती

यह एक मात्रा है, इसी प्रकार प्रातः सायं २ खुराक शहद साथ या बकरी के दूध के साथ दें।

(२२) शीशम की छाल के बुरादे की पोटली १ तोला, दूध २० तोला में पानी २० तोला मिला कर उसमे पोटली डालकर मंद २ आग पर पकावे, दूध मात्र रहजाने पर १ तोला मिश्री मिला कर सुबह शाम पिलावें, तो मुंह और नाक से रुधिर आना हर तरह का पुराना ज्वर, एवं राजयक्ष्मा में लाभ होता है।

(२३) मृगांक रस जो ताम्र रहित है क्षय-रोग में अति उपयोगी सिद्ध हुआ है काम में लाना चाहिए।

(२४) "मुक्ता पंचामृत" योगरत्नाकर का पूर्ण मात्रा में अधिक समय तक व्यवहार करने से क्षय रोग में अच्छा लाभ करता है।

(२५) घीया के भीतर खूबकला की पोटली भर कपरोटी कर भोभर में पका कर देने से क्षय में बड़ा अच्छा फायदा होता है। मात्रा ३ माशा

(२४) घीया १ सेर	पेठा १ सेर
चारों मगज़ ८ छटांक	खूबकला १ छटांक
गिलोय १ पावभर	नीमकी छाल १ छटांक
चन्दन सफेद १ छटांक	धनिया १ ,,
खुरपा १ ,,	अडूसा १ ,,
पितपापड़ा १ ,,	यवासा १ ,,
बकरी का दूध ५ सेर	बंसलोचन १ ,,
खस १ छटांक	

वाष्प-यंत्र द्वारा अर्क निकाल कर दिन में २ वार ३-३ तोला की मात्रा में दें।

(२५) सफेद चन्दन १० तो०	लालचन्दन १० तो०
खस १० तो०	पद्माख १० तो०
नागर मोथा १० तो०	ताजी गिलोय १० तो०
पित्तपापड़ा १० तो०	नीमछाल १० तो०
नीलोफर १० तो०	कासनी के बीज १० तो०
सोंफ १० तो०	कद्दू के बीज १० तो०
नेत्र-वाला १० तो०	धनिया १० तो०
तुलसी के बीज २ तो०	छोटी इलायची २ तो०
पोस्त डोडा २ तो०	ईख की जड़ ५ तो०
जवासे की जड़ ५ तो०	धमासा ५ तो०
मुण्डी ५ तो०	मुलहटी ५ तो०

सबको कूट रात को आठ गुने पानी में भिगो दें और प्रातः काल अर्क खींच लें। मात्रा ६ तोले। २ तोले मिश्री डाल कर पिलावें।

क्षय, उष्णावात, मूत्रकृच्छ्र, हृदय की अधिक धड़कन, के लिए अत्यन्त उपयोगी है।

(२६) क्षय के ज्वर मे वर्धमान पिपली का प्रयोग उत्तम है ।

(२७) क्षय के कास में उपकारी प्रयोग—

बेहदाने की गिरी २ माशा	कद्दू की मींगी २ माशा
खीरे की मींगी २ माशा	केसर १ माशा
कीकर का गोंद ३ माशा	निशास्ता ३ माशा
कतीरा ३ माशा	मीठे बादाम की छिली हुई गिरी ४ माशा
मुलहटी सत्व ४ माशा	मुनक्का निर्बीज ४ माशा
पोस्त ४ माशा	मिश्री ७ माशा

सबको कूट छान कर आवश्यकतानुसार बेहदाने के लुआब में मिला कर चने के बराबर गोलिया बनावे ।

यह क्षय की खांसी में बहुत उत्तम गुणकारी है ।

उन्माद

सरकार द्वारा दी जानेवाली औषधियों के उपयोग का विवरण.

सर्पगंधा:—मात्रा २ रत्ती से ६ रत्ती रात्रि में गुलाब जल में भिगो दें, प्रातः पीवें, दिन में रोग की तीव्रता के अनुसार कई बार दे ।

अमरसुन्दरी:—मात्रा ३ रत्ती से ६ रत्ती तक ब्राह्मी तथा शंखपुष्पी के क्वाथ अथवा शरबत के साथ दें ।

+ ब्राह्मी   + शंखाहुली
+ बला

अश्वकंचुकी:—मात्रा २ रत्ती से ८ रत्ती तक । तीव्रावस्था में दस्त लगते ही शान्ति मिलती है ।

+ चिन्हत औषधियें सहयोगी (अनुपान) या स्वतंत्र रूप से भी प्रयुक्त होती हैं ।

निम्न प्रयोग अनुपान रूप से अथवा स्वतंत्र औषधि रूप में सेवन किये जा सकते है, वैद्यों को चाहिए कि वे स्वयं आवश्यकतानुसार बना लें या धनाढ्यों द्वारा प्राप्त करने का उद्योग करें।

(१) कालारि रस—(योगचिन्तामणि)

(२) कुष्माण्ड रस—मात्रा १० तोला प्रति ६ घटे से मिश्री मिला कर दें।

(३) शतावरी

(४) महावातविध्वंसक रस—

अमरसुदन्री रस २ तो०
ब्राह्मी ४ तो०
शंखाहुली ४ तो०
बालछड़ ४ तो०
कस्तूरी ½ तो०

बालछड़ के क्वाथ में घोट कर गुटी बनावे।

(५) बिडंग १६ तो०
हींग २ तो०
बच २ तो०
जटामांसी २ तो०
कूट ४ तो०
काला नमक ४ तो०

चूर्ण बना कर उसे ४ माशा तक लें।

(६) जटामांसी ३॥ तो०
बड़ी इलायची १ तो० २ माशा
रक्तचन्दन १ तो० २ माशा
खुरासानी अजवायन ७ माशा
अश्वगंधा १ तो० २ माशा

ऊपर लिखी दवाइयें ले कर कूट तैयार कर लें। फिर १ तो० दवा को १६ तो० जल मे क्वाथ करे अष्टमांश रहने पर छान ले शहद मिला कर पीवे। निन्द्रा कर है, अपस्मार में भी लाभदायक है।

(७) बावची १ तोले से लेकर २-३ तोले तक बलानुसार कई दिन सेवन कराने से बहुत लाभ पहुंचता है। (माणक)

(८) ब्राह्मी घृत

(९) महाचैतस घृत

(१०) ब्राह्मी वटी—

गायजुबां १॥ तो०	ब्राह्मी १। तो०
शंखाहुली २॥ तो०	मरिच २॥ तो०
गुलाब के फूल १ तो०	सेवती के फूल १ तो०
गुलकन्द ५ तो०	मुनक्का १ तो०
+ त्रिकटु	+ जटामांसी
+ लवंग	+ अक़ीक़
+ तज	+ प्रवाल भस्म
+ असगंध	+ मोतीपिष्टी
+ वच	+ अम्बर
+ काला जीरा	+ केशर
+ कस्तूरी	

अपस्मार-मूर्छा-योषापस्मार (हिस्टीरिया)

सरकार द्वारा दी जानेवाली औषधियों के उपयोग का विवरण.

सर्पगंधा

हींग

अश्वकंचुकी

ब्राह्मी

अम्बर चटनी

समीरपन्नग रस

+ चिह्नित औषधियें सहयोगी (अनुपान) या स्वतंत्र रूप से भी प्रयुक्त होती हैं ।

निम्न प्रयोग अनुपान रूप में अथवा स्वतंत्र रूप से सेवन किये जा सकते हैं। वैद्यो को चाहिए कि वे इन्हें स्वयं बनालें अथवा उद्योग करके धनाढ्यों से प्राप्त करने का प्रयत्न करें।

(१) वातकुलान्तक रस

(रस राज सुन्दर)

(२) कलारि रस

(योगचिन्तामणि)

(३) कुष्माण्ड रस

(४) असगंध

(५) खुरासानी अजवायन ८ तो॰ कर्पूर २ तो॰
हिंगुल शुद्ध २ तो॰ गांजा २ तो॰

गांजे को पानी से पहिले खूब घोटले फिर सब मिला कर मरिच बराबर गुटी बनावे। मात्रा १ से २ रत्ति

(६) बच मीठी ५ तो॰ सुवर्ण-गेरु ३ तो॰
पलाश बीज ३ तो॰

मधु और ब्राह्मी के रस के साथ।

(७) बच चूर्ण

शहद के साथ चाटे ऊपर दूध पीवें, भात खावे।

(८) महाचैतस घृत

(९) ब्राह्मी घृत

(१०) मल्लसिन्दूर १½ रत्ती गिलोय सत्व ४ रत्ती
एरण्ड सत्व २ रत्ती हींग ४ रत्ती

शहद के साथ दो वार दें।

(११) **ब्राह्मी तैल**

तैल १ सेर ब्राह्मीस्व रस या क्वाथ १ सेर

भांगरास्वरस १ सेर शंखपुष्पी रस १ सेर

बकरी दूध १ सेर

तैल की तरह पाक करे।

(१२) **ब्राह्मी घृत** (१)

ब्राह्मीस्व रस १०७ तो० शंखपुष्पीस्वरस १०७ तो०

गोदुग्ध १०७ तो० घृत ८० तो०

इनको शनैः शनैः घृत विधी से पकावे।

(१३) **ब्राह्मी घृत** (२)

ब्राह्मी ५ सेर वच ५ सेर

कूठ ५ सेर शंखपुष्पी ५ सेर

जल ५ सेर

क्वाथ करके चौथाई रहने पर छान कर घृत १ सेर में मिला कर घृत-विधि से पकावे।

(१४) जटामांसी १ तो० असगंध $\frac{1}{4}$ तो०

खुरासानी अजवायन $\frac{1}{2}$ माशा

क्वाथ करके इसके साथ कोई भी दवा देवें।

(१५) जटामांसी ॥ सेर खुरासानी अजवायन १० तो०

हरड़ बड़ी ३० तो० जल ६ सेर

क्वाथ करे जब ४ सेर पानी रहे तब छानकर शक्कर ४ सेर मिला कर शरबत बना लें।

वायु शान्त करता है एवं निद्रा कर है।

(१६) **सारस्वत चूर्ण—**

कूठ १ तो० असगंध १ तो०

सैंधव नमक १ तो० अजवायन १ तो०

अजमोद १ तो० सफेद जीरा १ तो०
स्याह जीरा १ तो० सोंठ ६ तो०
मिरच १ तो० पीपर १ तो०
पाठा १ तो० शंखपुष्पी १ तो०
बच १२ तो०

सबका चूर्ण कर ब्राह्मी रस की ७ भावनायें देना चाहिए यह चूर्ण ३ माशा, घी १ तोला, शहद ३ माशा के साथ मिला कर चटाना चाहिए अपस्मार, उन्माद मे लाभप्रद है, बुद्धिवर्धक है।

नस्य (चेतन्य)—

(१) कर्पूर ½ तो० चूना २ तो०
नवसादर १ तो० जल १० तो०

शीशी में भर कर जरूरत के समय सुंघावे।

(२) अरीठा गुड़ जल

भिगो कर रस निकाल कर सुंघावे।

(३) नकछीकनी

(४) कायफल

(५) कोड़ी को जला कर अर्क दुग्ध में भिगो दे, फिर पीस कर सुंघावे।

(६) शंखकीट (सूखा) १ भाग पलाशपापड़ा (सूखा) ½ भाग
केशर १ भाग कायफल २ भाग
नकछीकनी १ भाग कर्पूर १ भाग

पीस कर नस्य वना लें।

(सहचर)

(७) नाग केशर | बड़ी इलायची
कायफल | उस्तखद्दूस
बर्गेतिब्वत समभाग

(८) आरण्योपल भस्म ८ भाग | तुत्थ १ भाग
मिला कर नस्य दें।

वातव्याधि-आमवात

सरकार द्वारा दी जानेवाली औषधियों के उपयोग का विवरण.

अश्वकंचुकी:—मात्रा १ रत्ती से २-३ रत्ती, कई दिन दें। कभी कभी तो १-२ दिन में ही पीड़ा घट जाती है।

रास्नादि क्वाथ

पुनर्नवादि क्वाथ

शृङ्ग भस्म—मात्रा १ माशा।

+ अजवायन
+ धापाण
+ शंख भस्म
+ यवक्षार
+ अमर सुन्दरी वटी
+ लक्ष्मीनारायण रस
+ अग्नितुण्डी वटी
+ शूलहर वटी
+ शंख वटी
+ एरण्ड तैल

योगराज गुग्गुल

रास्नादि क्वाथ

स्वर्जिक्षार

विषगर्भ तैल—(मर्दन)

+ चिन्हित औषधियें सहयोगी (अनुपान) या स्वतंत्र रूप से भी प्रयुक्त होती हैं।

निम्न प्रयोग अनुपान रूप मे अथवा स्वतंत्र रूप में सेवन किये जा सकते है वैद्यों को चाहिए वे इन्हें स्वयं वना लें अथवा उद्योग करके धनाढ्यो से प्राप्त करने का प्रयत्न करें।

(१) पुनर्नवादि क्वाथ

साटे की जड़	सोठ
पटोल	नीम-छाल
दारु-हल्दी	कुटक
पथ्या	गिलोय
रोहीड़ा छाल	शरपुँखा
देवदारू	एरण्ड-जड़

क्वाथ करके दे, इससे आमवात में जल्दी लाभ होता है।

(२) सुरंजान चूर्ण

सुरंजान पीठी	एरण्डमूल
विधारा	असगंध
उसवा	

आमवात में उपयोगी। मात्रा ३ से ४ माशा तक।

(३) गवारपाठे की गिर में आटा ओसन कर रोटी पका कर उस में घृत खांड मिला कर ७ दिन लें।

(४) उसवा १ भाग चोपचिनी १ भाग

इनका क्वाथ शहद के साथ देने से सन्धिवात में वहुत लाभ पहुँचाता है।

+ सुरंजान १ + सनाय १

+ चिन्हित औषधियें सहयोगी (अनुपान) या स्वतंत्र रूप से भी प्रयुक्त होती है।

(५) लहसुन ६ तो० भुनीहींग १ तो०
जीरा १ तो० सैंधव १ तो०
काला नमक १ तोला सोंठ १ तो०
पीपर १ तो०

इनकी गुटी बनाकर १ माशा मात्रा मे प्रातः सायं सेवन कराना चाहिए।

(६) समीरपन्नग रस १ रत्ती एरएड सत्व के साथ दें।

(७) आँवला गुड़
क्वाथ करके दें।

(८) वात गजकेशरी गुटी—

धतूरा फल ४० तो० सोंठ ४० तो
अजवायन ४० तो० पानी २ सेर

हांडी मे डाल कर पकावे जब पानी करीब जल जाये तब उसमें से सोंठ निकाल पीस कर गोली४ रत्ती प्रमाण बना लें।

लेप, मर्दन:—

(१) वातनाशक तैल—
कायफल १० तो० अफीम १ तो०
तैल ३० तो०- तैल विधि से पकावें।

(२) सोठ ५ तो० कूठ ५ तो०
सीगीमोरा ५ तो० तैल ७५ तो०
तैल विधि से पकावें।

(३) नालुका लेप—
धत्तूर नालुका (तज)
अफीम लाल मिरच
लेप करना चाहिए।

(४) राजिका लेप—

राई — हल्दी
खांड

वेदना स्थान पर पानी मे पीस कर लेप करना चाहिए।

(५) धत्तूर बीज — पुनर्नवा-जड़
अफीम

लेप करना चाहिए।

(६) नारायण तैल

(७) महा नारायण तैल

(८) बातनाशक तैल—

अर्कपत्र रस ८० तो० — धत्तूरपत्र रस ८० तो०
तमाखू क्वाथ ८० तो० — पलाण्डु रस ८० तो०
तैल ८० तो०

तैल मे मिला कर धीरे २ आंच दे। तैल अर्धसिद्ध होने पर

कायफल ५ तो० — लहसुन १० तो०
जायफल ५ तो० — कुचीला ५ तो०
विष १ तो०

इन पाचो को पानी में क्वाथ करके तैल मे डाल दें। तैल की विधि से तैल तैयार करे—वातपीडा, एठन, वायटे आदि मे गुणकारी है।

(९) मेवा ५ तो० — नमक $\frac{1}{4}$ तो०
मालकागनी $\frac{1}{2}$ तो० — कपास-मींगी $\frac{1}{2}$ तो०
एरण्ड के बीज की मींगी $\frac{1}{2}$ तो०

कूट कर टिकड़ी बनाले, जहां पीड़ा हो टिकड़ी बांध दे। २४ घंटे के बाद पट्टी बांधी हुई खोले। फिर नये तरीके से कूट कर बट्टी बना कर बांधलें। ५-७ दिन में अवश्य लाभ होगा।

औपसर्गिक प्रमेह

सरकार द्वारा दी जानेवाली औषधियों के उपयोग का विवरण.

यवक्षार
फिटकरी
हजरलयहूद
एलादि वटी
माणिक्य रस
चन्द्रप्रभा गुगल
स्वादिष्ट विरेचन

निम्न प्रयोग अनुपान रूप में अथवा स्वतंत्र रूप में सेवन किये जा सकते हैं वैद्यों को चाहिए कि वे इन्हें स्वयं बनालें अथवा उद्योग करके धनाढ्यों से प्राप्त करने का प्रयत्न करें।

कर्पूर शिलाजीत (कलमीशोरा)
पुनर्नवा अर्क
केला पान रस
खस
चन्दन
मेंहदी

शीतल मिरच
अडूसा
बला

(१) लाल अर्क

मेहदी १ तो०
धनिया १ तो०
जीरा १ तो०
गोखुर १ तो०
अम्बु ३० तो०

हांडी में रात को भिगो दें।

प्रातः १५ तोला पानी, खांड मिलाकर पिलावे, ६-६ घंटे से दें। २-३ दिन में जलन को तुरंत आराम होगा। पेशाब खुल कर आने लगेगा।

(२) शीतल मिरच १ भाग
कल्मीशोरा १ भाग
यवक्षार १ भाग
पाषाण भेद १ भाग

मात्रा ६ रत्ती पानी के साथ दें।

(३) सुरंगा रत्ती १
वेरजा सत्व रत्ती ३
हजरलयहूद रत्ती १
शीतल मरिच रत्ती ३
यवक्षार रत्ती ३

पानी के साथ ६-६ घंटे से दें।

(४) दूब रस मिश्री के साथ दें।

(५) पाषाण भेद
अमलतास
गोखरू
धमासा सम भाग

चूर्ण करके ६ माशा दूध की लस्सी के साथ दें।

(६) बबूल फली ३ माशा
बबूल गोंद १ माशा का चूर्ण
पानी के साथ दें।

(७) कच्ची हल्दी का रस मिश्री मिला कर दें।

(८) शर्बत—

खस अनार

कुष्माण्ड चन्दन

केला

उपर्युक्त किसी शर्बत का प्रयोग करें।

(९) वंशलोचन इलायची

कल्मीशोरा मिश्री

दालचीनी

दूध मिले पानी के साथ लेवे।

(१०) चोबचीनी का फांट पीना उत्तम है।

(११) छोटी हरड़ १० तोला मोरथोथा ½ तोला

नीम्बू रस में ३ दिन तक घोटे फिर चने बराबर गुटी बनावे।

(१२) विरेचनवटी—

जमालगोटा ४ तोला चूना १० तोला

अम्बु ८० तो०

इनका क्वाथ करे फिर जमालगोटा छील कर मींगी निकाल लें।

बालहरीतकी २ तोला जमालगोटा शु० १ तोला

नींबू रस में दिन ३ तक घोट कर गुटी बनावे।

उत्तरबस्ति (पिचकारी)।

मुखपाक चूर्ण रत्ती १ अम्बु १ तो०

पानी में भिगो छान कर काच की पिचकारी से लगावे।

(२३) अर्क -

खस २ तो०   [illegible] २ तो०
पुनर्नवा २ तो०

१ सेर जल में भिगोकर मन्द अग्नि पर पकावे। चौथाई रहने पर छानकर

तैल विरोजा २० बूंद।
तैल चदन २० ,,
तैल कवाव चिनी २० बूंद।

दिन में तीन वार पिलावे।

प्रमेह

सरकार द्वारा दी जानेवाली औषधियों के उपयोग का विवरण.

चन्द्रप्रभा वटी
शतावर
असगंध
प्रवाल भस्म
शृंग भस्म
अभ्रक भस्म

निम्न प्रयोग अनुपान रूप से अथवा स्वतंत्र औषधि रूप में सेवन कराये जा सकते है, वैद्यों को चाहिए कि वे स्वयं तैयार कर लें अथवा धनाढ्यों द्वारा प्राप्त करने का उद्योग करें।

(१) आंवलो का स्वरस पिलाना चाहिए

(२) कच्ची हल्दी का स्वरस पिलाना चाहिए

(३) प्रमेहघ्न चूर्ण—

तालमखाना ५ तो० जायफल ३ तो०
मिश्री ७॥ तो०

३ माशा से १ तोला तक दूध के साथ।

(४) विल्व पत्र रस १ तो० पिलाना चाहिए

(५) आम के कोमल पत्तों का रस १ तो० पिलाना चाहिए

(६) बड़ दूध ½ बताशे के साथ देना चाहिए

(७) जामुन गुठली गुडमार
सोंठ समभाग का चूर्ण ६ माशा प्रातः सायं पानी के साथ

(८) सालम चूर्ण ३ माशा दूध के साथ

(९) अधकच्ची बबूलफली को लेकर छाया में सुखा कर चूर्ण कर ले अथवा शहद के साथ ले। ऊपर दूध पिलावें।

(१०) शिलाजीत ३ रत्ती दूध के साथ

(११) वंगभस्म २ रत्ती मधु के साथ

(१२) न्यग्रोधादि चूर्ण ६ माशा जल के साथ
(चक्रदत्त)

(१३) वसंतकुसमाकर रस [illegible]

(१४) केला १ तो० [illegible] ।

पौष्टिक, प्रमेह नाशक

(१५) नीम के तने [illegible]
[illegible]
उस नीम के [illegible] का प्रयोग किया जाये ।

मधुमेह और प्रमेह पीड़िका में

(१६) न्यग्रोधादि चूर्ण

मधुमेह में

(१७) वसन्तकुसुमाकर

(१८) कपिकच्छु वटी

कौंच बीज [illegible] तो० [illegible], १२ घंटे [illegible] में भिगोकर ऊपर के छिलके उतार लो और सिलापर [illegible] फिर उनकी गोलियां चने के बराबर [illegible] जाने के बाद शहद में डाल दें। यह औषधि तैयार है [illegible] सुबह शाम दूध के साथ खाना चाहिये उत्तम धातु पौष्टिक है ।

(१९) मधुमेह में—

मकरध्वज १ रत्ती जामुन की गींजी चूर्ण १ माशा

मधु के साथ सेवन करने से मूत्र में चीनी जाना कम हो जाता है एवं मूत्र का परिमाण भी कम होता है काला जामुन इस रोग में उत्तम लाभ दायक है ।

(२०) मधुमेह में अफीम का प्रयोग रामबाण है ।

रक्त विकार

सरकार द्वारा दी जाने वाली औषधि के उपयोग का विवरण :

पंचसकार चूर्ण
अश्वकंचुकी
त्रिफला चूर्ण
मंजिष्ठादि क्वाथ
माणिक्य रस
कैशोर गुग्गुल
शंख भस्म

निम्न प्रयोग अनुपान रूप में अथवा स्वतंत्र रूप में सेवन किये जा सकते है वैद्यों को चाहिए वे इन्हें स्वयं बनालें अथवा उद्योग करके धनाढ्यों से प्राप्त करने का प्रयत्न करें।

---

(१) मदयन्ती चूर्ण (आचार्य)

शु० गंधक १ तो० मेंहदी २ तो०
मिश्री २ तो०

मात्रा ३ माशा से ६ तथा ९ तक जल के साथ

(२) शु० गंधक

(३) गोरख मुण्डी

(४) रक्त शोधक चूर्ण—

चोबचीनी २ तो० — उशबा २ तो०
सुरंजान मीठी ४ तो० — चिरायता १ तो०
मुण्डी १ तो० — आंवला १ तो०
मुलहटी १ तो० — कुटकी १ तो०
अनंतमूल १ तो०

कूट कर चूर्ण बनालें । मात्रा माशा ३ से ६ तक ।

(५) [illegible] के बुरादा को ८ गुने पानी में भिगोकर [illegible] शीतल एवं रक्तशोधक है ।

(६) अडूसा — चिरायता

इन दोनों का क्वाथ करके छान ले और क्वाथ के पानी में नीचे लिखी औषधियें मिलादें ।

इलायची १ तो० — गुलाब फूल ३ तो०
अम्लवेत २ तो० — गिलोय सत्व २ तो०
प्रवालपिष्टि १ तो० — यवक्षार २ तो०
निशोथ १ तो० — मिश्री १५ तो०

अवलेह तैयार करें ।

(७) निशोथ १० तो० — त्रिफला ५ तो०
पीपर २ तो० — शक्कर ५ तो०
शहद १० तो०

कूटकर चूर्ण बनालें ।

(८) हल्दी ५ तो० पानी में पीसलें, आक के पत्तों का रस ४ सेर सरसों का तेल ½ सेर ।

तेल को गरम करके हल्दी तथा आक का रस मिलादें और धीरे २ आंच दें । तैल तैयार हो जावे तब छानले और इसमें १०) रुपये भर मोम डालकर गरम करके मिलादें फिर नीचे लिखी वस्तुएँ मिला दें ।

गंधक २॥ तो०	टंकण फूला २॥ तोला
रेवतचीनी २॥ तो०	कपीला २॥ तो०
काली मिरच २॥ तो०	राल २॥ तो०
मुरदासिंगी २॥ तो०	नीला थोथा २॥ तो०

पारद, गंधक } कज्जली ४ तो०

सब भली प्रकार मिलाकर वरनी में भरलें।

दाद में अव्यर्थ औषध कही जाती है। खाज में भी लाभ दायक है।

(९) वनौषधिचन्द्रोदय

नील के पेड़ का पंचाग लेकर क्वाथ करके २० तो० प्रात. बीमार को पिला देने से रस कपूर का विकार आराम हो जाता है। मुँह के छाले मिट जाते हैं।

(१०) रक्तशोधक अर्कः—

उसवा २॥ तो०	नींमगिलोय २॥ तो०
कुटकी २॥ तो०	गोरखमुंडी २॥ तो०
मजीठ २॥ तो०	हरड़ २॥ तो०
बहेडा २॥ तो०	आंवला २॥ तो०
नींम छाल २॥ तो०	चोबचीनी २॥ तो०
सारिवा १। सेर	

१० सेर पानी में डाल कर भिगो देवें रात्रि भर भीगने के बाद सुबह अर्क खींचलें यह रक्त शुद्धि के लिये रामबाण है।

(१) चूने का पानी (पीला)

चूना १ तो०	गंधक १ तो०
पानी १६ तो०	

इन्हें हांडी में पकावें। जब पानी का रङ्ग नारंगी की तरह हो जावे तब छान लें।

चर्मविकार पामा में इस पानी को लगावें। जन्तुनाशक है।

(२) नींबू सत्व ६ माशा गंधक १० तो०
कपूर ४ तो० मोरथोथा ॥ तो०
टंकण १। तो० यशद भस्म ४ तो०
खोपरे का तेल ८० तो०

इनका अच्छी तरह घोल तैयार कर खुजली पर मर्दन करे।

(३)

चन्दन तैल
चमेली का तैल } मालिश करें।

(४) चोवा अर्क

(१) टोपाली (नारियल का छिलके का)
\+ कश
(२) बादाम छिलके का चोवा
\+ लहसुन + गोरथोथा

(५) दद्रुनाशक तैल

धतूर रस ५ तो० कज्जली ५ तो०
तैल २५ तो०

तैल को गरम करके धतूर रस मिला कर पकावें फिर कज्जली मिला कर घोटें। तेज करने के लिये बादाम चोवा (छिलको का तेल) थोड़ा सा मिलादें। इसे दाद पर लगावें। यह दाद की चेपिया एवं अक्सीर दवा है।

\+ चिह्नित वस्तुएँ मिलाकर भी चोवा निकाल सकते हैं।

पामाहर लेप—

पारा १ भाग	गंधक १ भाग
मेनशिल १	हरताल १ ,,
हिंगुल १	मुरदासिगी १ ,,
नीला थोथा ½	बावची १ ,,
मिरच १	

धुले हुए घी के साथ मिलाकर मरहम बनालें।

(१) दद्रु नाशक गुटी

गंधक १ तो०	फिटकरी फुली १ तो०
राल १ तो०	कपूर ¼ तो०
हरताल १ तो०	टंकण १ तो०

(२) पामा नाशक तैल

नारियल तैल १ सेर	मौम २० तो०
सुहागा ५ तो०	फिटकरी ५ तो०
शु० गंधक ५ तो०	

सूखी एवं पकी दोनों प्रकार की खुजली में उपयोगी है।

(३) कण्डु नाशक तैल

खोपरा तैल १० तो०	कपूर १ तो०
गंधक १ तो०	सुहागा ३ माशा
मोर थोथा १॥ माशा	

(४) निशोथ १ भाग　　शु० गंधक २ भाग

चूर्ण कर ३ माशा प्रातः एवं ३ माशा सायंकाल शर्वत उन्नाब या शहद के साथ चाटें।

(५) पारद १ तो० गंधक १ तो०
सुहागे की खील १ तो०

पारद और गंधक की कज्जली बनाकर सुहागा मिला देना चाहिए।

घृत या तैल मे मिलाकर लगाने से दाद, खुजली, फोड़ा, फुन्सी, घाव आदि शर्तिया अच्छे होते हं।

रक्त रोधक

सरकार द्वारा दी जानेवाली औषधियो के उपयोग का विवरण.

फिटकरी

शंखभस्म खट्टे दही के साथ दी जावे।

कौड़ी भस्म (कपर्द भस्म)

सोना गेरु

प्रवालपिष्टी

पाषाण

+ गूलर के क्वाथ के साथ

उदुम्बर सत्व

माजूफल

लाल बोल

एलादिवटी

+ चिह्नित औषधिये स्वतंत्र एवं अनुपानरूप मे दी जा सकती है।

निम्न प्रयोग अनुपान रूप में अथवा स्वतंत्र रूप में सेवन किये जा सकते हैं। वैद्यों को चाहिए कि वे उन्हें स्वयं बनालें अथवा उद्योग करके धनाढ्यों से प्राप्त करने का प्रयत्न करें।

केले के पत्तों का स्वरस

अनार के फूलों का स्वरस

(१) लाक्षा

(२) कबूतर बींट

(३) काक जंघा १ तो०   राल १ तो०
सोना गेरु १ „   कमलगट्टा १ तो०
कलमीशोरा १ तो०
मात्रा माशा ३ जल के साथ दें।

(४) तवाखीर ५ तो०   लाख १० तो०
अशोक छाल १० तो०   मोचरस १० तो०
इन्द्रासन (भांग) १० तो०   चन्दन १० तो०
इलायची २ तो०   मिश्री ५७ तो०

मात्रा माशा ४ से ६ तक जल के साथ दें।

(५) अफीम

(६) दूबरस

(७) खून खराबा (हीरादखनी)

गुलाबजल के साथ दिया जावे।

(८) अडूसे के पत्तो का रस

शहद एवं घृत के साथ देवें।

(९) अडूसा, मुनक्का, छोटी हरड़ समभाग इनका हिम बनाकर देदें।

(१०) वासा कुष्माण्ड खंड

(चक्रदत्त)

अच्छा एवं अनुभूत है।

(११) राल १ तो०
मोच रस १ तो
अफीम १ रत्ती
खांड १ तो०

मात्रा ६ माशा दही के साथ २-३ वार दें।

(१२) हिम रत्नाकर चूर्ण (ठंडाई)

गुलाब पुष्प	श्वेत गुलाब पुष्प
काहू	कुलफा
खस	धनिया
कासनी	निलोफर
सोंफ	इलायची छोटी
खीरा के बीज	ककडी के बीज
मिरच काली	चन्दन श्वेत

मात्रा माशा ६ से १ तोला तक रात्रि मे दवा को पाव भर पानी मे भिगो दें। प्रातः पीसकर पानी में छान लें फिर मिश्री मिलाकर पीवें।

यह पित्त की सब बीमारियें-रक्तश्राव, भ्रम, प्यास, जलन आदि नाशक है।

(१३) माजूफल
अहिफेन

धावडी के फूल के रस में घोटकर चने-बरावर गोली बना लेवें और जल के साथ २ रत्ती प्रमाण सेवन करावें।

(१४) अपामार्ग पत्र रस—

कहीं से भी रक्त निकलता हो लगाने से एवं पीने से रक्त बन्द कर देता है।

(१५) कुरफे के बीज ३ तोला और नोसादर ६ माशा लेकर मिट्टी के प्यालों में कपड़ मिट्टी लगाकर मजबूत बन्द कर देवें फिर एक पहर तक आरण्योपल की आग में पकावें स्वांग शीतल होने पर निकाल कर पीस लें।

मात्रा ६ रत्ति, शर्बत अंजुवार या अडूसे के शर्बत के साथ देवें उर:चत में फेफड़े से निकलने वाला रक्तबंद होजाता है। यह योग बहुत उत्तम गुणकारी है।

रक्तपित्त

सरकार द्वारा दी जानेवाली औषधियों के उपयोग का विवरण.

फिटकरी—पानी में मिलाकर सुंगावें।

शंख भस्म

कौड़ी भस्म

हीरा दक्खन

एलादि वटी

निम्न प्रयोग अनुपान रूप से अथवा स्वतंत्र औषधि रूप में सेवन कराये जा सकते हैं, वैद्यों को चाहिए कि वे स्वयं तैयार कर लें अथवा धनाढ्यों द्वारा प्राप्त करने का उद्योग करें।

(१) छाणा (आरण्योपल) भस्म

फूली फिटकरी

कागज भस्म

बारीक पीस कर नस्य दें।

(२) प्रवाल भस्म अथवा शंख भस्म

दही के साथ दें।

(३) दोनका रस सुंघावें। अथवा खांड मिला कर पेट में दे।

(४) केला रस सुंघावें या पीलावें।

(५) नींबू रस सुंघावें पावें।

(६) अनार पुष्प रस सुंघावें या पीने को दें।

(७) धनिया — आंवला
पित्तपापड़ा — अडूसा
मुनक्का

हिम बनाकर पीने को दें।

(८) मुल्तानी मिट्टी ६ माशे — सूखा आंवला ६ माशे

दोनों को ठंडे पानी में पीसकर सिर एवं ललाट पर लेप करे नकसीर रोकने में अच्छा है।

व्रण

सरकार द्वारा दी जानेवाली औषधियों के उपयोग का विवरण.

शुष्कपाक नाशक—पानी में घोलकर लगावें।

व्रणशोथहर—व्रण के शुरू में पानी में घोलकर लगावें। जिससे व्रण न पके।

निम्न प्रयोग अनुपान रूप में अथवा स्वतंत्र रूप में सेवन किये जा सकते हैं। वैद्यों को चाहिए कि वे इन्हें स्वयं बनालें अथवा उद्योग करके धनाढ्यों से प्राप्त करने का प्रयत्न करें।

(१) पुल्टिश—

तिल — अलसी
गेहूं — दही
सत्तू (यव) — कूठ
नमक

पुल्टिश बनाकर फोड़े पर गरम गरम बांधे। ६-६ घण्टे से पलटें।

(२) उपरोक्त पुल्टिश में—

+ टंकण — + स्वर्जिक्षार
+ कबूतर बींट — + शतावर

(३) कोयले की पुल्टिस।

(४) नीम के पत्तों को घोटकर गरम करके बांधें।

(५) सहजना छाल
दारु हल्दी — सोंठ
तज — अफीम

लेप करे।

(६) हल्दी — राल
चूना

व्रण पर लगाने से २-३ बार में वह फूट जाता है।

+ चिन्हित औषधियें सहयोगी (अनुपान) या स्वतंत्र रूप से भी प्रयुक्त होती हैं।

—

(७) अश्वगंधाका लेप करे।

मरहम—

अंगरेजी में मरहम वेसलीन में बनाये जाते है। आयुर्वेद में मरहम बनाने के निम्न तरीके है:--

(१) खोपरा तैल १० तो० राल १० तो०

इन्हें मिला कर जल में खूब धोवे फिर जिस वस्तु का मरहम बनाना हो वह इसमे मिला दिया जावे।

(२) मक्खन २० तो० राल ३० रत्ती
तुत्थ ५ रत्ती

मिलाकर खूब पानी डाल कर मथले फिर पानी भरे बर्तन में रखे। जिस वस्तु का मरहम बनाना हो वह इसमें मिला दिया जावे।

(३) पीला मरहम—

तैल २० तो० मैण १० तो०
राल १० तो० सिन्दूर ६ तो०

तैल को गरम करके मैण मिलाकर फिर राल सिन्दूर मिला दें। फिर पकाकर पानी मे ५० बार मथ कर गाढा होजावे तब बरनी में भरदे।

(४) काला मरहम—

मैण २० तो० घृत २० तो०
सुपारी राख २० तो०

घृत एव मैण को अग्नि पर मिला फिर उसमें सुपारी राख मिला दें। फिर कासी की थाली मे १०० बार पानी से धोवें।

नम्बर १

मोम ५ तो० नारियल तैल १० तो०
मेनशिल ½ तो० सफेद काजल (यशद पुष्प) ५

नम्बर २

मोम ५ तो० नारियल तैल १० तो०
टंकण ५ तो०

नम्बर ३

नीमपत्र स्वरस १¼ सेर तिल तैल ६० तो०
मैण २० तो०

सिक्थ तैल—

तैल ५ भाग मोम १ भाग

मिलाकर वेसलीन की भांति मरहमों के लिये उपयोग करे।

(१) सिक्थ तैल ६ माशा हिंगुल ६ माशा

उपदंश व्रण रोपण है।

(२) सिक्थ तैल ६ तो० टंकण ६ माशा
सिंदूर ६ माशा

व्रण को शुद्ध करके भरता है।

(३) सिक्थ तैल ६ तो० अफीम ६ माशा
माजूफल ३ माशा

(४) सिक्थ तैल ६ तो० यशद पुष्प १ तो०

(५) सिक्थ तैल ६ तो० मुरदासिंगी १ तो०

(६) सिक्थ तैल १२ तो०
मुरदासिंगी २ माशा
कपूर २ माशा
फिटकरी २ माशा
हिंगुल ६ माशा
टंकण २ माशा
रस कपूर २ माशा
सिंदूर २ माशा

रस्सी बन्द करके घाव भरता है।

(७) पीपल की अन्तर छाल को जलाकर राख बनाले, व्रण गीला हो तो उसपर इसे बुरका दे। सूखा हो तो घृत में मिला कर मरहम की तरह लगावे। ऊपर पट्टी बांध दे।

(८) मनुष्य की खोपड़ी वा दूसरी अन्य हड्डियां जला कर मरहम लगावे।

(९) चतारि मरहम—

कपूर २ तो०
कत्था ४ तो०
चाकमिट्टी ५ तो०
सिंदूर २ तो०
मुरदाशंख १ तो०
घीया भाटा ५ तो०
घृत ४० तो०

घृत को पहिले १०१ वार धोलें बरफ के पानी से। फिर सब दवाइयें बारीक पिसी हुई मिला दें। फिर बरतन में रख दें।

सड़ा गला पुराना घाव आराम होता है। जलन फ़ौरन दूर होती है।

(१०) सफेदा २ तो०
टंकण २ तो०
नारियल तेल २० तो०
कज्जली १ तो०
मोरथोथा १ तो०
मेण १० तो०

(११) धाय की जड़ घिस कर लगाने से घाव तुरन्त भर जाता है।

व्रण या नाड़ी व्रण पर भी—

(१२) ककेड़े के पत्तों को जला कर उनको खूब महीन बांटकर पुराने घी मे मिलाकर व्रण पर चाती चिपका देवे। गहरा घाव भी आराम होगा।

(१३) गंधविरोजा, राल, जंगाल, का बनाया मरहम तीनों प्रकार के शोधन रोपण और शमन क्रिया करता है घाव भरने में अत्युत्तम है।

(१४) सर्वतोभद्र तैल (नीम का तैल) हर प्रकार के व्रण में उत्तम है।

(१५) नाड़ी व्रण के लिये—

बारूद २ तो०   तिल्ली का तैल ४ तो०

अच्छी तरह मिलाकर घोटकर रखलें नासूर को बहुत जल्दी ठीक करता है।

यदि नासूर गहरा हो तो पिचकारी द्वारा दवा अन्दर पहुँचानी चाहिए।

फुटकर रोग

सरकार द्वारा दी जानेवाली औषधियों के उपयोग का विवरण.

शीत पित्त

[illegible]

+ गुड

शंख भस्म

+ खट्टा दही

नवसादर

+ नारंगी रस

प्रवाल

स्वादिष्ट विरेचन

फिटकड़ी

मंजिष्ठादि क्वाथ

+ चिन्हित औषधियें सहयोगी (अनुपान) या स्वतंत्र रूप से भी प्रयुक्त होती है।

निम्न प्रयोग अनुपान रूप में अथवा स्वतंत्र रूप में सेवन किये जा सकते हैं वैद्यों को चाहिए वे इन्हें स्वयं बना लें अथवा उद्योग करके धनाढ्यों से प्राप्त करने का प्रयत्न करें।

(१) आर्द्रक खण्ड

(२) अरणी कशाय (पंचांग या जड़)

(३) कोई रक्तशोधक औषध

(४) चूना, सरसों का तेल, हल्दी, तिल, सैंधव, सरसों, पवाड़ बीज

इनसे तैल सिद्ध करके उबटन करे।

(५) हींग, पानी

जहां खुजली हो लगावें।

(६) अजवायन की धूनी दें।

(७) राल ४ माशा, मिश्री ४ माशा

प्रातः सायं जल से दें।

गल शोथ (ग्रंथि) Tonsillitis शोथ

सरकार द्वारा दी जानेवाली औषधियों के उपयोग का विवरण.

[illegible]

नवसादर

[illegible]

एलादि वटी

यवक्षार

लवङ्गादि वटी

[illegible]

निम्न प्रयोग अनुपान रूप से अथवा स्वतंत्र औषधि रूप में सेवन कराये जा सकते हैं, वैद्यों को चाहिए कि वे स्वयं तयार कर लें अथवा धनाढ्यों द्वारा प्राप्त करने का उद्योग करें।

(१) गुलखेरु गुल बनप्सा

बकरी के दूध के साथ पीसकर गले के बाहर कान के इधर उधर शोथ पर लेप करावे उत्तम है।

(२) काली जीरी १ तो० सोंठ १ तो०

खूब महीन पानी के साथ पीस कर गरम करके कान के नीचे की शोथ पर लेप करे ३ दिन में ही शोथ ठीक हो जायेगा यह प्रयोग Mumps पर अत्युत्तम है।

(३) गलग्रन्थिशोथ पर—

कलमीशोरा १ तो० कर्पूर ३ माशा
खेरसार १ तो०

तीनों को महीन पीस कर रखले तिनके पर रुई की फरेरी बनाकर एवं उसे पानी में भिगोकर उपरोक्त दवा मे फरेरी भर लेवे और गले में सावधानतया लगावे यह बहुत उत्तम प्रयोग है एवं गुण धीरे २ अवश्य करता है पर स्थायी लाभदायक है।

अग्नि दाह

सरकार द्वारा दी जानेवाली औषधियों के उपयोग का विवरण.

एरण्ड तैल
हीरा दुक्खन
लौंग

निम्न प्रयोग अनुपान रूप से अथवा स्वतंत्र औषधि रूप में सेवन कराये जा सकते है, वैद्यों को चाहिए कि वे स्वयं तैयार कर लें अथवा धनाढ्यों द्वारा प्राप्त करने का उद्योग करें।

१) खोपरा तैल   चूने का ऊपर का पानी

दोनों को मथ कर लगावे।

(२) कत्था   राल
कपीला   तैल
कपूर

घृत को १०० वार धोकर ऊपर की दवाइयें मिलाकर लगावें।

(नींबी जोधा ठाकुर)

(३) कपर्द भस्म   मुरदासिंगी
सोना गेरु   गिलोय सत्व
चन्दन   वंश लोचन
एरण्ड तैल

दवाओं को बहुत बारीक पीसकर तैल मे मिला दे और फिर तैल को खरल मे घोटें। जले स्थान पर बहुत हल्के हाथ से लगावे तुरन्त लाभ होगा।

(४) तैल तो० ४ मे नीम के पत्ते तो० ॥ मिलाकर पकाले फिर छान कर १ तो० राल मिलाकर छान कर पानी में १०१ वार मथकर धोवे। सफेद मरहम बन जायेगा। विशेष लाभदायक है।

अभिघात

सरकार द्वारा दी जाने वाली औषधियों के उपयोग का विवरण।

हरमुख बेन

एराब मैन

फिटकरी

निम्न प्रयोग अनुपान रूप में अथवा स्वतंत्र औषधि रूप में सेवन कराये जा सकते हैं, वैद्यों को चाहिए कि वे स्वयं तैयार कर लें अथवा धनाढ्यों द्वारा प्राप्त करने का उद्योग करें।

(१) लाल फिटकरी १ तो०
सज्जी १ तो०
अर्जुन १ तो०
मैदा लकड़ी १ तो०
आंबा हल्दी १ तो०

पीस कर जल में गरम करके चोट पर लेप करावे।

(२) अहिफेन ॥ तो०
इमली के पत्ते ॥ तो०
सेमर की छाल ॥ तो०
गूलर पत्ते १ तो०

इसका लेप करावें।

(३) नमक को गरम कर पोटली से सेक करना चाहिये।

(४) तैल में नमक की पोटली को डुबाकर सेक करना चाहिए।

(५) उदुम्बर सत्व का लेप करना चाहिए पर ध्यान रहे यह लेप सूखना नहीं चाहिए थोडा थोडा पानी डालते रहना चाहिए वह घाव जो तुरन्त हुआ है उसे शीघ्र ही भर देगा।

(६) धत्तूर पत्र को तैल से चुपड़ कर बाधना चाहिए।

बाला स्नायुक

सरकार द्वारा दी जानेवाली औषधियों के उपयोग का विवरण.

शंख भस्म

कपर्द भस्म

नवसादर

निम्न प्रयोग अनुपान रूप से अथवा स्वतंत्र औषधि रूप में सेवन कराये जा सकते है, वैद्यो को चाहिए कि वे स्वयं तैयार कर लें अथवा धनाड्यो द्वारा प्राप्त करने का उद्योग करे।

(१) सीप भस्म सुबह तथा शाम दही व छाछ के साथ १ सप्ताह तक लगातार दी जावे। माशा १ से ३ तक। कोई कोई इसके साथ विडंग भी मिला देते है।

(२) नोसादर माशा १ दही तोला २० के साथ अथवा छाछ के साथ मिला कर रोज ७ दिन तक दे, ऊपर दही ही खाने को दे। कई नवसादर की की मात्रा १ मा० की जगह ३ माशा तक भी देते हैं।

(३) निर्गुण्डी स्वरस तो० १ रोज ३ वार तीन दिन तक देवे।

(४) तुलसी की जड को पानी के साथ पीसकर लेप करे। ३ घंटे बाद बाले का मुख बाहर आ जायेगा इसी प्रकार हर तीसरे घण्टे बराबर लेप करने पर बाला बाहर निकल आयेगा।

(५) यदि बाले का दर्द बहुत ज्यादा हो तो बेंगन (वृत्तांक) गोल बीच में से काट कर उसमे कपूर और हींग पीसकर भरदे अंगारे पर गरम कर बाले

के स्थान पर बांध दें । और ऊपर पट्टी लगादें तो वेदना से विकल रोगी को अवश्य शांति मिलेगी ।

२) अकलकरा
कुलिंजन
कौड़ी चूर्ण (भस्म)

तीनों को अदरक के रस में घोट कर लेप करें ।

स्त्री-रोग

सरकार द्वारा दी जाने वाली औषधियों के उपयोग का विवरण ।

<u>सूतिका ज्वर</u>

दशमूल क्वाथ
देवदार्वादि क्वाथ
प्रताप लंकेश्वर
कस्तूरादि वटी
लक्ष्मीविलास रस
लक्ष्मीनारायण रस
सर्पगंधा
सुदर्शन चूर्ण
+ नीम छाल
अभ्रक
प्रवाल
कपर्द भस्म
वसन्त मालती

<u>कष्टरजःशूल</u>

सर्पगंधा
चन्द्रप्रभावटी
अजवायन

+ चिह्नित औषधियें स्वतंत्र एवं अनुपानरूप से दी जा सकती हैं ।

निम्न प्रयोग अनुपान रूप से अथवा स्वतंत्र औषधि रूप में सेवन किये जा सकते हैं, वैद्यों को चाहिए कि वे स्वयं आवश्यकतानुसार बना लें या धनाढ्यों द्वारा प्राप्त करने का उद्योग करें।

(१) कपास जड़ की छाल का काथ

(२) उलट कंबल

(३) गवारपाठा रस १ तो० बना हुआ कल्मीशोरा १ रत्ति कली किये बर्तन में डाल कर मन्द अग्नि से पकाकर क्षार बनालें। मात्र ३ माशा से ६ माशा तक।

प्रदर

सरकार द्वारा दी जाने वाली औषधियों के उपयोग का विवरण।

फिटकरी
प्रवाल
चन्द्रप्रभा गुगल
काल बोल
शतावर
अश्वगंधा
माजूफल
टंकण
गोदन्ती हरिताल (पाषाण
लोह भस्म
एलादि वटी
योगराज गुगल
त्रिफला

निम्न प्रयोग अनुपान रूप से अथवा स्वतंत्र औषधि रूप में सेवन कराये जा सकते है, वैद्यों को चाहिए कि वे स्वयं तैयार कर लें अथवा धनाढ्यों द्वारा प्राप्त करने का उद्योग करें।

(१) आवला १ तो० चावल १ तो०
मिश्री २ तो०

माशा ६ पानी के साथ लें।

(२) हीरा दखन (दम्मुलखवेन) + इलायची

(३) राल

(४) कबूतर-बींट

(५) मावुत माजूफल को खिचडी में पका कर फिर पीस कर दूध के साथ दें।

(६) उदुम्बर सार

(७) फालसा-जड़ १ तो०

दूध के साथ दें।

(८) नागकेशर माशा ४ मिश्री के साथ दें।

(९) शंखभस्म —
चावल के पानी के साथ अथवा दही के साथ दें।

(१०) अशोक छाल

(११) काकजंघा १ तो० वासा-पत्र १ तो०
लाक्षा १ तो०

साठी चावलों के पानी के साथ दें।

+ चिह्नित औषधियें सहयोगी (अनुपान) या स्वतंत्र रूप से भी प्रयुक्त होती हैं ।

(१२) शंखपुष्पी

(१३) बबूल की कोपल १ तो० पीस कर रात्रि मे पानी से भरे घड़े के बाहर लगादे, खुली हवा मे वह घडा रखे प्रातःकाल घोट कर मिश्री मिला कर लेवे।

(१४) अशोकारिष्ट

(१५) दार्व्यादि क्वाथ

(१६) दशमूल का बहुत बारीक चूर्ण चावलो के पानी साथ दें।

(१७) कहरवा (तृणकांतमणि)

(१८) धावडी के फूलो का प्रयोग प्रदर मे अधिकाश मे करते है वस्तुत फूल के स्थान में जड देनी चाहिए, मात्रा माशा ३ से ६ तक पिलावे।

(१९) विधायरा १ तो० लोध १ तो०
समुद्रशोष १ तो० मिश्री ३ तो०

श्वेत प्रदरनाशक है।

(२०) पुष्यानुग चूर्ण

(२१) टाटभस्म (बोरी)

शहत मे चाटे।

(२२) कमलगट्टा

(२३) कांटेवाला चंदलिया

(२४) बबूल की हरी ताजी पत्तिया २ तो० मिरच नग ४-५
बकरी का दूध २० तो० मिश्री

प्रात साय पीवे (रक्तप्रदर)

(२५) लज्जावती का पंचांग महीन पीस कर १ माशा जल या घृत के साथ दे। (रक्तप्रदर)

(२६) कणगच (करंज) ५ तो० दाडिमफूल २ तो०
कूड़ाछाल २॥ तो० सफेद चन्दन २ तो०
नागकेशर २॥ तो० शीतल मिर्च २॥ तो०
आवला २॥ तो० हरड़छाल २॥ तो०
लोध २॥ तो० अंजीर के क्वाथ के साथ ७ पुट देकर
बंशलोचन २ तो० मिश्री १४ तो०

मिला ले, मात्रा ६ माशा सभी प्रकार के प्रदरों में लाभदायक है।

(२७) प्रदररिपु—

शतावर १ तो० जामुन गुठली १ तो०
विदारी कंद १ तो० लोध १ तो०
खांड १ तो०

मात्रा माशा ३ जल के साथ दे. शरपुंखा-जड़ का चूर्ण मिश्री मिला कर तण्डुलोदक के साथ देने से रक्तप्रदर रक्तश्रावमें लाभदायक है।

(२८) केवड़ा की जड ३ माशा घिस कर मिश्री मिला कर दोनों समय दी जावे, पानी के साथ। रक्तप्रदर में लाभदायक है।

(२९) नागकेशर १२ माशा बीयाभाटा ६ माशा
शीतल मिर्च १२ माशा मिश्री ५ तो०

इस की ७ पुड़ी बनावे। प्रभात को ठंडे पानी से दे।

(३०) गोखरू गेरू
शीतल मिर्च सुर्मा-सफेद
अनारकली कत्था

मात्रा माशा ३ सुबह और शाम पानी व दूध के साथ दें

(३१) शाल १० तो० मिश्री १० तो०

इसका चूर्ण बना कर कच्चे दूध के साथ लेवें, रक्तप्रदर एवं श्वेतप्रदर दोनों मे लाभ दायक है ।

सुख-प्रसव (प्रसव वेदना नाशक),

सरकार द्वारा दी जानेवाली औषधियों के उपयोग का विवरण.

एरण्ड तैल—नाभि पर लगाना चाहिये ।

निम्न प्रयोग अनुपान रूप से अथवा स्वतत्र औषधि रूप मे सेवन करायें जा सकते है, वैद्यो को चाहिए कि वे स्वयं तैयार कर लें अथवा धनाढ्यो द्वारा प्राप्त करने का उद्योग करें ।

(१) इमली की जड कमर के बांधे ।

(२) पुनर्नवा जड ,, ,, ।

(३) अपामार्ग जड ,, ,, ।

(४) ऊंटकटारे की जड़ ,, ,, अथवा पीवे ।

(५) तुलसी के पत्तो का क्वाथ ।

(६) अपामार्ग की जड को पीस कर गर्भमार्ग के इतस्तत:लेप कर देवे इससे समय पर बिना वेदना के प्रसव हो जायेगा ।

ध्यान रहे प्रसव हो जाने के बाद उस लेप को धोडालना चाहिए अन्यथा नुकसान होने की संभावना रहेगी ।

बाल-रोग

सरकार द्वारा दी जानेवाली औषधियों के उपयोग का विवरण

<u>ज्वर काल</u>

ज्वर नाशक चूर्ण

क्षुद्रादि क्वाथ

धापाया

सोमकल्प

शृङ्ग भस्म

मृत्युञ्जय रस

काल-मेघ

अश्वकंचुकी

<u>अतिसार</u>

टंकण

गंगाधर चूर्ण

कर्पूरादि वटी

सौंफ अर्क

अजवायन अर्क

शृङ्ग भस्म

धापाया

एरण्ड तैल

यवक्षार

निम्न प्रयोग अनुपान रूप से अथवा स्वतंत्र औषधि रूप में सेवन कराये जा सकते है, वैद्यों को चाहिए कि वे स्वयं तैयार कर लें अथवा धनाढ्यों द्वारा प्राप्त करने का उद्योग करें।

बाल ज्वर-श्वास—

(१) वासा शरबत

(२) लहसुन अर्क (रस)

(३) मिरच ५ तो० तमाखू कड़वी (मालवी) ५ तो०
गुड १० तो०

गजपुट में भस्म करले मात्रा १ रत्ति से २ रत्ति तक शहद के साथ दें।

(४) अर्कमूल छाल मात्रा ॥ रत्ति से १ रत्ति तक।

(५) वच-कषाय या शरबत

(६) मदनफल कषाय व शरबत

(७) अजवायन तो० ४०
एरण्ड-काकड़ी (पपैया का गिर तो० ४०) पानी ३२० तोला

इन्हें भिगो कर प्रातः अर्क निकाल ले, फिर अर्क से चोथाई चूनेका पानी मिला कर बच्चों के आयु अनुसार मात्रा में सेवन कराने से अपचन वमन कब्जी आध्मान आदि सब रोग दूर होकर शक्ति बढ़ती है।

(८) अरविन्दासव—

बालकों के प्रायःसभी रोगों पर उत्तम सिद्ध हुआ है।

(९) गुलाबी चूर्ण—

आम की गुठली ५ तो० जामन की गुठली ५ तो०
मोचरस ५ तो० नेत्रबाला ५ तो०
हिंगुल १ तो०

(१०) चातुर्भद्रावलेह—

नागरमोथा
पीपर
अतीस
काकड़ा सिंगी

उदुम्बरसार चूर्ण

बबूलसार चूर्ण

आम्रसार चूर्ण

जामुन छाल का रस बकरी के दूध से दे

बालश्वसनक

सरकार द्वारा दी जानेवाली औषधियों के उपयोग का विवरण.

अश्वकंचुकी
एरण्ड तैल
शृङ्ग भस्म
गोदन्ती
लाक्षिक रस
टंकण
यवक्षार
ज्वर मुरारि
प्रवाल भस्म
तालीशादि चूर्ण
सितोपलादि चूर्ण

निम्न प्रयोग अनुपान रूप से अथवा स्वतंत्र औषधि रूप में सेवन कराये जा सकते है, वैद्यों को चाहिए कि वे स्वयं तैयार कर लें अथवा धनाढ्यों द्वारा प्राप्त करने का उद्योग करें।

(१) रेवतचिनी सत (सीरा) ½ रत्ति मुलहटी ½ रत्ति।

२/३ वार तीन २ घंटे से दे।

(२) पिण्डली (सिमला प्रमेश की बनस्पति)—मात्रा १ रत्ति से २ रत्ति दिन में बार बार ले।

(३) फिटकरी ॥ तो० गो-मूत्र तो० ५

उबाल कर थोड़ा २ पिलावे।

(४) बाली कषाय (देखो श्वसन ज्वर)

(५) भल्लातक भस्म शहद के साथ चटावे—मात्रा ¼ रत्ति।

(६) लहसुन भस्म शहद के साथ दे।

(६) इस रोग में बच्चे को हल्का विरेचन अवश्य देना चाहिए अन्यथा औषधियें लाभदायक नहीं होगी।

सूखा रोग, क्षय, निर्बलता,

सरकार द्वारा दी जानेवाली औषधियों के उपयोग का विवरण.

मण्डूर भस्म
षापाण
शृङ्ग भस्म
प्रवाल भस्म
सुवर्ण वसंत मालती

निम्न प्रयोग अनुपान रूप में अथवा स्वतंत्र रूप में सेवन किये जा सकते है। वैद्यों को चाहिए कि वे उन्हें स्वयं बनालें अथवा उद्योग करके धनाढ्यों से प्राप्त करने का प्रयत्न करें।

(१) चूने का शरबत—

चूने का पानी	मिश्री
(२) गोमूत्र	केशर

कईबार छान कर बलानुसार एवं आयु को ध्यान में रखते हुए पिलावे।

+ मकोय रस भी मिला दें।

(३) चातुर्जात अवलेह।

(४) हाथवाले थोहर के फल जो लाल होते हैं उन्हें लाकर अग्नि पर सेकना चाहिए ताकि कांटे जल जावें फिर रस निकाल कर दूनी मिश्री मिलाकर शरबत बनावे, मात्रा बूंद ३० से ६० तक।

(५) सत मुलहटी १ तो०	मोथा १ तो०
पीपल १ तो०	विडंग १ तो०
जावित्री १ तो०	अतीस १ तो०
काकड़ा सिंगी १ तो०	दूधिया वच १ तो०
जायफल १ तो०	केशर १ तो०
कस्तूरी ३ माशा	अमृतसंजीवनी वटी ४० तो०

सबको एकत्र एक शीशी में भर कर ७ दिन तक रखे, बीच २ में हिलाते रहें फिर छान कर दूसरी शीशी में भर दें।

मात्रा १ बूंद से १० बूंद अनुपान दूध वा जल, सर्व रोगों में हितकारी।

+ चिह्नित वस्तुएं मिलाकर चोवा भी निकाल सकते हैं।

(६) चूना २॥ तो० (बिना बुझा हुआ) जल १ सेर

चूने को जल में भिगो देना चाहिए एक घंटे के बाद पहला पानी निकाल देना चाहिए फिर दूसरा पानी डाल कर २ घंटे के बाद जो पपडी ऊपर आ जावे उसे निकाल कर शेष पानी को बहुत धीरे से दूसरे पात्र में निकाल लें ध्यान रहे चूना न आने पावे, उस पानी में शक्कर डाल कर चाशनी बनालेवे यह बच्चों के हर प्रकार के रोग के लिए आम लाभदायक है, अग्निप्रदीपक है।

बालदंतोद्गम पीड़ा

सरकार द्वारा दी जानेवाली औषधियों के उपयोग का विवरण.

टंकरा

शंख भस्म

निम्न प्रयोग अनुपान रूप से अथवा स्वतंत्र औषधि रूप में सेवन कराये जा सकते है, वैद्यों को चाहिए कि वे स्वयं तैयार कर लें अथवा धनाढ्यो द्वारा प्राप्त करने का उद्योग करें।

(१) शिरीष के बीजो की माला पहिनने से दांत जल्दी आ जाते है।

(२) कपूर—गले में पहिनावें।

(३) कायफल—गले में पहिनावे।

(४) निगुण्डी जड़—गले में पहिनावे।

(५) बच्चे के दांत निकलते समय सुहागे की खील खूब महीन पीस कर शहद के साथ हल्के हाथ से मसूडों पर मलना चाहिए इससे दात आसानी मे निकलते है, और यह यदि पेट में भी चला जाय तो हानिप्रद नहीं लाभदायक ही है।

शिरःशूल

सरकार द्वारा दी जाने वाली औषधियों के उपयोग का विवरण.

सर्पगन्धा

पथ्यादि क्वाथ (शार्ङ्गधर)

लक्ष्मीविलास रस

दशमूल क्वाथ

शृङ्गभस्म

+ नवसार

गलदेवधारा मर्दन

सितोपलादि चूर्ण

प्रवाल भस्म

लवंगादि चूर्ण

निम्न प्रयोग अनुपान रूप से अथवा स्वतंत्र औषधि रूप में सेवन करा ये जा सकते है, वैद्यों को चाहिए कि वे स्वयं तैयार कर लें अथवा धनाढ्यों द्वारा प्राप्त करने का उद्योग करें।

(१) तरतुम्बे के बीजों का तैल

(२) द्रोणपुष्पी लेप

\+ चिह्नित औषधियें सहयोगी (अनुपान) या स्वतंत्र रूप में भी प्रयुक्त होती हैं ।

(३) धापाषा २ रत्ति प्रबाल भस्म २ रत्ति
छोटी इलायची १ माशा

सूर्योदय से १ घंटे पहिले दही के साथ लें, २ घंटे बाद और इतनी ही लें, दही के साथ।

(४) षडबिन्दु तैल नस्य

(५) कट्फल नस्य

(६) घृत में केशर तथा मिश्री को मिला कर पका कर सूंघे।

(७) घृत में सैंधव नमक मिला पका कर सूंघे।

(८) मरिच	हिंगुल
सोंठ	पीपर
नक छीकनी	तम्बाखू
खसखस	

पीस कर सूंघे।

(९) बादाम	पोस्त के डोडे
चिरौंजी	तिल
गई	पिस्ता
लोबान	कुचला

घृत के साथ लपसी की तरह पका कर शिर पर बांधे।

(१०) [illegible] नीला कदम्ब के फूलों को गुड़ में मिला कर ४ गोली बनालें. शिरःशूल के समय १ गोली दें, तुरन्त लाभ होगा फूल छाया में सुखाये होने चाहिए।

(११) [illegible] से ८ रत्ती तक पीपरामूल का चूर्ण ३ माशा शहद के साथ चटावे. शिर दर्द में लाभप्रद है।

(१२) एरण्ड पत्र कूट
आवला

पानी में पीस कर शिर के लेप करे, शिरपीड़ा आराम होगी।

(१३) शिरो-विरेचन—

(१) अपामार्ग बीज (२) बंदाल डोडा

मुख-रोग (जिह्वा—मसूड़ा—दन्तरोग)

सरकार द्वारा दी जानेवाली औषधियों के उपयोग का विवरण.

मुखपाक नाशक चूर्ण

लवंगादि चूर्ण

फिटकरी

एलादि वटी

निम्न प्रयोग अनुपान रूप से अथवा स्वतंत्र औषधि रूप में सेवन कराये जा सकते है, वैद्यों को चाहिए कि वे स्वयं तैयार कर ले अथवा धनाढ्यों द्वारा प्राप्त करने का उद्योग करें।

(१) गरम पानी में फिटकरी और कत्था मिला कर कुल्ला करे।

(२) अजवायन रत्ति ¼ टंकण रत्ति ४½
सोडा रत्ति २½ पानी तो० ५

मिला कर कुल्ला करे।

(३) मुलहटी के क्वाथ करके उससे कुल्ले करे।

४) उदुम्बर सार—

+ मधु

५) मुख व्रणारि चूर्ण—

कत्था घीया भाटा
शीतल मिरच इलायची

+ गेरू

इस में तूतिया भी थोडासा मिला देते है. लगाने पर तुरत आराम होता है।

(६) खदिरादि वटी—

कत्था १ सेर जल ८ सेर

१॥ सेर रहने पर छान ले, फिर सुपारी, कपूर, जावित्री, शीतल मिरच, जायफल ४-४ तो० मिला कर गुटी बना ले, सर्व प्रकार के मुख-रोग में हितकर है।

(७) चमेली के पत्ते बबूल की छाल

क्वाथ करके कुल्ला करे।

८) शीतल मिरच कत्था

चूर्ण करके जीभ पर बुरकावे।

+ चिह्नित औषधियें सहयोगी (अनुपान) या स्वतंत्र रूप से भी प्रयुक्त होती हैं।

(९) राल शहद
गुड़

तैल में पका कर मरहम बना लें

जिह्वा, मसूड़ों के छाले और मुख पाक के लिए श्रेष्ठ है।

(१०) केसूला के फूल का क्वाथ व हिम करके कुल्ले करे।

फलत्रिकादि क्वाथ (मुखरोग)

मसूड़ों की सूजन (दंत वेष्ट)

सरकार द्वारा दी जानेवाली औषधियों के उपयोग का विवरण.

त्रिफला क्वाथ

+ सुरंगा

कुल्ले करे।

फिटकरी

गरम पानी में मिला कर कुल्ले करें।

+ बबूल सार + उदुम्बर सार

+ चिह्नित औषधियें सहयोगी (अनुपान) या स्वतंत्र रूप से भी प्रयुक्त होती है।

निम्न प्रयोग अनुपान रूप से अथवा स्वतत्र औषधि रूप में सेवन कराये जा सकते है, वैद्यों को चाहिए कि वे स्वयं तैयार कर लें अथवा धनाढ्यों द्वारा प्राप्त करने का उपयोग करें।

(१) लोबान मंजन

(२, कर्पूर मंजन

कर्पूर
हीरा दकूकन
माजूफल
कत्था
इलायची

(३) एरण्ड ककड़ी जो कच्ची हो उसके दूध को रोजाना मसूड़ों पर लगाने से दंतपूय ठीक होता है।

दन्त-पीडा

सरकार द्वारा दी जानेवाली औषधियों के उपयोग का विवरण.

धन्वन्तरी (रामदेव-धारा)

रुई के फाये से दांत में लगावे।

लवंगादि चूर्ण का मंजन

निम्न प्रयोग अनुपान रूप से अथवा स्वतंत्र औषधि रूप में सेवन कराये जा सकते है, वैद्यों को चाहिए कि वे स्वयं तैयार कर लें अथवा धनाढ्यों द्वारा प्राप्त करने का उपयोग करें।

(१) लवंग तैल

(२) दालचिनी तैल

(३) गरम पानी में नमक मिला कर कुल्ले करें।

(४) वच २॥ तो० जल २ सेर

क्वाथ करके चोथाई पानी रहने पर छानकर गरम २ कुल्ले करे, शोथ तथा पीड़ा दौनों को आराम करता है।

(५) दंतपूयहर मंजन (आचार्य)

भिलावा १ सेर त्रिफला २ सेर

इस की भस्म बनालें फिर नीचे लिखी दवाइयें मिला दे।

अकलकरा १ तो० वच १ तो०
कूठ १ तो० तेजवल छाल १ तो०
कपूरकाचरी १ तो० मोथा १ तो०
धनिया १ तो०

(६) अकलकरा १ तो० दालचिनी १ तो०
लवंग १ तो० तमाल पत्र १ तो०
टंकण १ माशा सैंधव १ तो०
बादाम का कोयला १० तो०

(७) दारु-हल्दी का स्वरस

गाढ़ा करके शहद में मिला कर मुख मे लगाने से दन्त पीडा दूर होती है।

(८) दशन संस्कार मंजन—

सोंठ ५ तो० मरिच १० तो०
मोथा ५ तो० कपूर ५ तो०
सुपारी कोयला ५ तो० दालचिनी ५ तो०
चाकमट्टी ४० तो० तूतिया १ तो०

(९) बज्रदन्त मंजन—

त्रिकटु ३ तो०

त्रिफला ३ तो०

तुत्थ १ तो०

विड्लवण १ तो०

सैंधव १ तो०

संचर १ तो०

पतंग १ तो०

माजूफल १ तो०

(१०) भिलावा—मंजन नं० २

भिलावा २ तो०

सैंधव नमक २ तो०

इन दोनों को अलग २ गजपुट में भस्म करे, फिर दोनों को मिला कर बारीक पीस कर मंजन बनाले दंत-पीडा सूजन और स्नायु पीडा में तुरंत लाभ दायक है।

नेत्र-पीड़ा

सरकार द्वारा दी जानेवाली औषधियों के उपयोग का विवरण.

आश्च्योतन (आंखो में डालने की बिन्दु)

(१) सुरमा अर्क—

फिटकरी ½ रत्ति

२॥ तो० गुलावजल में डाल कर शीशी में रखे, थोडी मिश्री भी मिलादे।

(२) टंकण अर्क—

टकण ४ रत्तिका, २० तो० गुलावजल में बनावे।

(३१) राल १० तो० मिश्री १० तो०

इसका चूर्ण बना कर कच्चे दूध के साथ लेवें, रक्तप्रदर एवं श्वेतप्रदर दोनों मे लाभ दायक है ।

सुख-प्रसव (प्रसव वेदना नाशक),

सरकार द्वारा दी जानेवाली औषधियों के उपयोग का विवरण.

एरण्ड तैल—नाभि पर लगाना चाहिये ।

निम्न प्रयोग अनुपान रूप से अथवा स्वतत्र औषधि रूप मे सेवन करायें जा सकते है, वैद्यो को चाहिए कि वे स्वयं तैयार कर लें अथवा धनाढ्यो द्वारा प्राप्त करने का उद्योग करें ।

(१) इमली की जड कमर के बांधे ।

(२) पुनर्नवा जड ,, ,, ।

(३) अपामार्ग जड ,, ,, ।

(४) ऊटकटारे की जड ,, ,, अथवा पीवे ।

(५) तुलसी के पत्तो का क्वाथ ।

(६) अपामार्ग की जड को पीस कर गर्भमार्ग के इतस्ततःलेप कर देवे इससे समय पर बिना वेदना के प्रसव हो जायेगा ।

ध्यान रहे प्रसव हो जाने के बाद उस लेप को धोडालना चाहिए अन्यथा नुकसान होने की संभावना रहेगी ।

बाल-रोग

सरकार द्वारा दी जानेवाली औषधियों के उपयोग का विवरण

ज्वर काल

ज्वर नाशक चूर्ण

सुद्रादि क्वाथ

धापाया

सोमकल्प

शृङ्गभस्म

मृत्युञ्जय रस

काल-मेघ

अभ्रकंचुकी

अतिसार

टंकण

गंगाधर चूर्ण

कर्पूरादि वटी

सौंफ अर्क

अजवायन अर्क

शृङ्गभस्म

धापाया

एरण्ड तैल

यवक्षार